सायंकालीन सन्ध्या
व
सुश्री प्रभादेवी जी की जीवनी



संपादिका :–
गुरुकृपावगाहिनी
पूज्या सुश्री प्रभादेवी जी
ईश्वर आश्रम, निशात, श्रीनगर, काश्मीर

प्रकाशिका :–
नीलम शर्मा
बी–88, एच. एम. टी. कॉलोनी,
पिंजौर, जिला पंचकूला (हरियाणा)

मुद्रक :–
मित्तल प्रिंटिंग प्रैस
459, कुराड़ी मोहल्ला,
नजदीक राधा कृष्ण मन्दिर,
कालका, जिला पंचकूला (हरियाणा)

प्रकाशन तिथि :– 24–11–2005

भूमिका

सन् 1997 से लगभग हर साल गुरु देवीजी सुश्री प्रभाजी सर्दियों में पिंजौर/पंचकूला में अपने नाती श्रीमती प्रमिलाधर जी व श्री सी. एन. धर साहिब के घर आकर कुछ समय रुकती हैं । हर शाम आस–पास के भक्तगण उनके दर्शनार्थ व सत्संग के लिये उन्हें मिलने जाते थे । मैं भी अपने पति सहित उनके दर्शन के लिए जाती थी । देवीजी हमें शैवग्रन्थ पढ़ाती व सन्ध्या करवाती । उन्हीं सन्ध्या स्तोत्रों को श्री मोतीलाल सोपोरी जी ने टाइप कराके हम सब को प्रतिलिपि दी । फिर डॉ० सुधीर सोपोरी (फरीदाबाद) के सुपुत्र ने इसे और अच्छे ढंग से संकलित करके और स्वयं कम्प्यूटर पर टाइप करके एक प्रतिलिपि हमें देवीजी द्वारा दिलवाई । अपने स्वर्गीय माता–पिता व गुरुजनों के संस्मरण से मुझे प्रेरणा हुई कि इसे छोटी सी पुस्तक के रुप में छपवाऊँ और देवीजी को भेंट दूँ । सन्ध्या स्तोत्रों के साथ ही देवीजी की एक संक्षिप्त जीवनी भी इस पुस्तक में दी जा रही है ताकि भक्तगण देवी जी से ज्यादा परिचित हो सकें ।

देवी जी मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें ।

1–11–2005 श्रीमती नीलम शर्मा
दीपावली
पिंजौर ।



अथ ध्यानम्

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत वस्त्रधरां शुभाम् ।
वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय प्रदाम् ।। १

सहस्त्रनेत्रां सूर्याभां नाना लंकार भूषितां ।
प्रसन्नं वदनां नित्यामप्सरोगणसेविताम् ।। २

श्री दुर्गा सौम्यवदनां पाशांकुशधरां पराम् ।
त्रैलोक्यमोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम् ।। ३

इति ध्यानम्

इन्द्राक्षी नाम सा देवी, देवतैः समुदाहृता ।
गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नीतिविश्रुता ।। १

कात्यायनी महादेवी, चन्द्रघण्टा महातपः ।
गायत्री सा च सावित्री, बह्माणी ब्रह्मवादिनी ।। २

नारायणी भद्रकाली, रुद्राणी कृष्णपिंगला ।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी, कालरात्रीस्तपस्विनि ।। ३

मेघश्यामा सहस्त्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी, घोररुपा महाबला ।। ४

आनन्दाभद्रजा नंदा, रोगहंत्री शिवप्रिया ।
शिवदूती कराली च, प्रत्यक्षा परमेश्वरी ।। ५

इन्द्राणी चन्द्ररुपा च, इन्द्रशक्ति परायणा ।
महिषासुरसंहर्त्री, चामुण्डा गर्भदेवता ।। ६

वाराही नारसिंही च, भीमा भैरव नादिनी ।
श्रुतिः स्मृतिधृति मेधा, विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।। ७

आनंदा विजया पूर्णा, मानस्तोकापराजिता ।
भवानी पार्वती दुर्गा, हैमवत्यंबिका शिवा ।। ८

शिवा भवानी रुद्राणी, शंकरार्धशरीरिणी ।
एतैर्नामपदैर्दिव्यै, स्तुता शक्रेण धीमता ।। ९

आयुरारोग्यमैश्वर्यं, सुखसंपत्ति कारकम् ।
क्षयापस्मारकुष्ठादि, तापज्वर निवारणम् ।। १०

शतमावर्तेयद्यस्तु, मुच्यते व्याधि बंधनात् ।
आवर्तयेत्सहस्त्रेण, लभते वांच्छितं फलम् ।। ११

राजायवशमांवाप्नोति, सत्यमेव न संशयः ।
लक्षमेकं जपेत्यस्तु, साक्षाद्वेवी स पश्यति ।। १२

त्रिकालं पठते नित्यं, धनधान्यादि च संपदः ।
अर्धरात्रे पठेन्नित्यं, मुच्यते व्याधिबंधनात् ।। १३

इदं स्तोत्रं महा पुण्यं, जपेतु फलवर्धनम् ।
विनाशायति रोगाणां, अपमृत्युं हरत्युत ।। १४

राजार्थी लभते राज्यं, धनार्थी विपुलं धनम् ।
इच्छाकामं तु कामार्थी, धर्माथी धर्ममव्ययम् ।। १५

विध्यार्थी लभते विद्यां, मोक्षार्थी परमं पदम् ।
इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं, सत्यं एवं न संशयः ।। १६

इति श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।



यामाया मधुकैटभ प्रमथिनी, या माहिषोन्मूलिनी
या धूम्रेक्षण चंडमुंडमथिनी, या रक्त बीजाशनि ।
शक्तिः शुम्भनिःशुम्भ दैत्यदलिनी, या सिद्धलक्ष्मी परा
सा देवी नवकोटि मूर्ति सहिता, मां पातु माहेश्वरी ।।

जाप्तं पापहरं नुतं बलकरं, सम्पूजितं श्रीकरं
ध्यातं मानकरं स्तुतं धनकरं, सम्भाषितं सिद्धिदं ।
गीतं सुन्दरिवांच्छितं प्रतनुते, ते पादपद्मयुगं
भक्तानां भवभीति भंजनकरी, सिद्धयषृदं पातुनः ।।

माया कुंडलिनी क्रिया मधुमती, कालीकलामालिनी
मातंगी विजया जया भगवती, देवी शिवा शांभवी ।
शक्तिः शंकर वल्लभा त्रिनयना, वाक्वादिनी भैरवी
ह्रींकारीत्रिपुरा परा परमयी, माताकुमारीत्यसि ।।

अनेन मंत्रपाठेन आत्मनोवाड् मनः कार्योपार्जित पापनिवारणार्थ श्री भगवती आमा कामा चार्वङी टंकधारिणी तारा पार्वती श्री शारिका भगवती शारदा भगवती व्रीडा भगवती वैखरी भगवती वितस्ता भगवती गंगा भगवती यमुना भगवती सिद्धलक्ष्मी महा लक्ष्मी महात्रिपुरसुन्दरी श्री क्षेमं करी भवानी प्रीताप्रीतास्तु ।।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरि ।
शुभानिभद्राण्यभिहंतुचापदः ।।

रोगान् अशेषान् अपहंसि तुष्टा ।
रुष्टा तु कामान् सकलान् अभीष्टान ।।

त्वां आश्रितानां न विपत् नराणाम् ।
त्वां ह्याश्रिताया श्रयतां प्रयान्ति ।।



।। श्री हनुमान चालीसा ।।

ऊँ श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
वरनऊ रघुवर विमल जसु, जो दायकु फल चारि ।।
बुद्धिहीन तनु जानके, सुमिरौं पवनकुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार ।।

जय हनुमान ज्ञान . . . .
. . . . हृदय मॅह डेरा ।।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रुप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।।

यह अष्टक हनुमान की, विरचित तुलसी दास ।
जो यह पढे प्रेम से होवे उसका दुःख नाश ।।

त्वयि नेच्छति का शंभोः शक्ता कुब्जयितुं तृणम् ।
त्वदिच्छानुग्रहीतस्तु, वहेत् ब्राह्मीम् धुरं न कः ।।

क्षमः कां नापदं हन्तुं, कां दातुं सम्पदं न वा ।
योऽसौ सो दयितोस्माकं देवदेवो वृषध्वजः ।।

वचश्चेतश्चकार्यं च शरीरं, मम यत्प्रभोः ।
त्वद्प्रसादेन तत्भूयाद्, भवत्भावैकभूषणम् ।।

अगाध संशयाम्भोधि, समुत्तरण तारिणीम् ।
वन्दे विचित्रार्थ पदाम्, चित्रां तां गुरुभारतीम् ।।

नौमि देवीं शरीरस्थां, नृत्यतो भैरवाकृतिः ।
प्रावृट् मेघ धनव्योम, विद्युत लेखा विलासिनी ।।

स्वातन्त्र्यशक्तिः क्रमसंसिसृक्षा,
क्रमात्मता चेति विभोरविभूतिः।
तदेवदेवित्रयमन्तरस्थाम्,
अनुत्तरंमेप्रथयत स्वरुपम् ।।

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्तमाल्यं,
मौलौ हठेननिहितं महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मंजु,
मंजीर शिञ्जित मनोहरंमम्बिकाया ।।

ये देवि ! दुर्धरकृतान्त मुखान्तरस्था,
ये कालिकाल घनपाशनितान्त बद्धाः ।
ये चंडिचंड गुरुकल्मषसिंधुमग्ना,
स्तान्पासिमोचयसितारयसि स्मृतैव ।।

ब्रह्मांड बुदबुद्धकदम्बकसंकुलोऽयं,
मायोदधिर्विविधदुःखतरङ्ग मालाः ।
आश्चर्यमम्बझटिति प्रलयं प्रयाति,
त्वदध्यान संतति महावडवामुखाग्नौ ।।



ओं जुं सः अमृतेश्वर भैरवाय नमः ।



परभैरवलीन्यै पराशक्तयै श्री शारिका देव्यै नमो नमः ।

आंजनेयाय रामदूताय महाबलाय स्वाहा ।

महाबलाय स्वाहा । महाबलाय स्वाहा ।



यत्र योगेश्वरः कृष्णः, यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्री विजयोर्भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ।।



ऊँ श्री गुरवे श्री ईश्वरस्वरुपाय नमः ।

ऊँ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।

ऊँ शांतिः शांतिः शांतिः ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चित् दुःख भाक् भवेत् ।।



करचरणकृतंवा, कायजंकर्मजं वा
श्रवण नयनजंवा, मानसंवापराधः ।
विदितं अविदितं वां, सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धेः, श्री महादेव शंभोः ।।

ऊँ उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा
उरसा मनसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः ।।

नाथं त्रिभुवन नाथं, भूतिसितं त्रिनयनं त्रिशूलधरं ।
उपवीतीकृतभोगिनं, इन्दुकलाशेखरं वंदे ।।

सर्वव्याधिहरं देवं, सर्वामयहरं शिवम् ।
दारिद्रय शमनं नित्यं, मृत्युजित् सर्वतोमुखम् ।।



नमो नमो गजेन्द्राय, एकदन्त धरायच ।
नमः ईश्वरपुत्राय, श्री गणेशाय नमो नमः ।।

आलम्बे जगदालम्बं, हेरम्बचरणाम्बुजम् ।
शुष्यन्ति यद्रजः स्पर्शात्, सद्यः प्रत्यूहवारधयः ।।



गुरुर्ब्रहमा गुरुर्विष्णुः, गुरुः साक्षान्महेश्वरः ।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन् तस्मै श्री गुरवे नमः ।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य, ज्ञानाञजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

गुरवे नमः, परमं गुरवे नमः, परमेष्ठिने गुरवे नमः
परमाचार्याय नमः आदि सिद्धिभ्यो नमः ।।



शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगनसद्रश्यं मेघवर्ण शुभांगम् ।।
लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथं ।।

मूकं करोति वाचालं पंगुं लङ्घयते गिरिं ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम् ।।
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरुतः, स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः
वेदैः साँगपद क्रमोपनिषदैः, गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुराऽसुरगणा देवाय तस्मै नमः ।।

ऊनाधिक्यं अविज्ञातं पौर्वापर्यविवरजितं
यश्चावधान रहितं बुद्धेर्विस्खलितं चयत्,
तत्सर्वं मम सर्वेष भक्तस्यार्तस्य दुर्मतेः ।
क्षन्तव्यं कृपया शंभो यतस्त्वं करुणा परः
अनेन स्तोत्र योगेनं तवात्मानं निवेदये,
पुनर्निश कारणं अहं दुःखानां नैमि पात्रताम् ।।



श्री गुरुवे नमः



सद्गुरु सुश्री प्रभादेवी जी

संकलनकर्त्ता : प्रमोद शर्मा

सुश्री प्रभा देवी जी की जीवनी लिखने के इस प्रयास का उद्देश्य, सद्गुरु के स्वरुप का ज्ञान पाना, सद्गुरु का सामीप्य प्राप्त करना व तदुपरान्त अपनी स्मृति को पावन करना मात्र है ।

१. **जन्म** : काश्मीर के धार्मिक डोगरा शासक महाराज प्रताप सिंह के अन्तिम शासन काल में, सन् 1924 को आषाढ मास (जुलाई) की 21वीं तिथि, सोमवार, प्रातःकाल, शुक्ल पक्ष नवमी को सुश्री प्रभाजी का जन्म, सराफ कदल, श्रीनगर में ब्राह्मण दम्पति श्रीमती राधिका रानी व श्री जिया लाल सोपोरी के घर पर हुआ ।

२. **जन्म परिवार** : देवी जी के प्रपिता महे पंडित देव राम जी, पाल देव वास गार्गी गोत्र के थे और अनन्त नाग तहसील के 'हारीपारी' गांव में रहते थे । सन् 1877 की बात है । देव योग से भारी वर्षा होने के कारण इनकी फसलें नष्ट हो गई और कश्मीर में अकाल पड़ गया । अकाल कारण घाटी की जनसंख्या अनुमानतः 3/5 भाग नष्ट हो गई और अन्य बहुत लोगों (जमीनदारों) ने सरकार को भुगतान चुकाने में असमर्थता के कारण व सरकार के अन्याय कारण देश त्याग करने में ही अपना कल्याण समझा । ब्रिटिश सरकार ने भी उस समय के डोगरा शासक महाराज रणबीर सिंह पर जनता के साथ जुल्म करने के गम्भीर आरोप लगाये थे । सुना है इसी समय में श्री दिवराम जी अपने पुत्र श्री जीन्द लाल जी के साथ काश्मीर छोड़कर भाग गये और

लखनउ शहर में जा कर बस गये । श्री जीन्द लाल जी व उनकी धर्म पत्नी श्रीमती भाग्यवती कश्मीरी मौहल्ले मे रहने लगे । लखनउ में श्री जीन्द लाल जी एक धनाढय काश्मीरी पंडित की जमीन/जयदाद की देखभाल करने के लिये नियुक्त किये गये थे । इस भांति अपनी गृहस्थी की लालना अच्छे ढंग से करते रहे । वहां इनकी तीन कन्यायें हुई । लड़का न होने से ये अति व्याकुल रहते थे । एक दिन घूमते घामते एक सिद्ध सन्यासी इनके घर में अतिथि के रुप में आये । उनकी हृदय से आवभगत करने के फलस्वरुप, उन्होने इन से कुछ वर मांगने के लिये कहा । दम्पति महोदय ने पुत्र प्राप्ति के लिये याचना की । तब उसने जीन्द लाल जी से कहा कि तुम्हें पुत्र होगा किन्तु तुम एक वर्ष के बाद ही स्वर्ग सिधार जाओगें अतः क्यों ऐसा वर मांग रहे हो ? कहते हैं श्री जीन्द लाल जी ने उतर में कहा–मेरे जीने से क्या तात्पर्य है, लड़का होगा तो वंश तो आगे चलेगा । इतने कहने पर महात्मा ने 'तथास्तु' कहा और चल दिये ।

ठीक एक वर्ष के बाद उन्हें पुत्र रत्न श्री जीया लाल सोपोरी की प्राप्ति सन् 1880 में हुई और अगले वर्ष श्री जीन्द लाल दिवाली के दिन स्वर्ग सिधार गये । बालक जीया लाल जी का पालन पोषण माता भाग्यवती के साथ–साथ बड़ी बहनों द्वारा हुआ । श्री जीया लाल जी ने लखनउ में स्कूल की पढ़ाई करके, लाहौर में डी0 ए0 वी0 कालेज में पढ़ाई की । वहां बी. ए. की परीक्षा में प्रथम कक्षा में उर्तीण हुए । गणित में इनकी बुद्धि तीव्र थी । इनकी बड़ी बहन श्रीमती किशोरीजी कौल श्रीनगर में विवाहिता थी । इनके पति लाहौर में व्यापारी थे । जिया लाल जी की दुसरी दोनों बहनों की शादी लखनउ में ही हुई थी। अतः सन् 1903 में, 23 वर्ष की आयु में इन्होने अपनी बड़ी बहन के पास श्रीनगर में रह कर नौकरी की तलाश की । इन्हे काश्मीर सरकार के पब्लिक वर्कस विभाग, श्रीनगर में नौकरी मिल गई । इनका विवाह भी श्रीनगर में श्रीमती राधिका रानी जी से सम्पन्न हुआ, जो कि फतेहकदल में दुकानें संगीन गली में जेहलम तट पर तीन मंजली मकान में रहने वाले दम्पति श्री आनन्द जी धर व श्रीमती अरण्य माली जी की कन्या थी । कहते हैं राधिका रानी की माता श्रीमती अरण्य माली को शंकर जी के दर्शन हुये थे । राधिका रानी जी एक विचारवान, निर्मल स्वभाव, श्रृद्धालु व हरि भक्तनी थी । श्री जिया लाल जी कट्टर आर्य समाजी विचारधारा वाले महानुभाव थे । नव विवाहित दम्पति महाराजगंज के पास सराफ कदल मोहल्ले मे बस गया ।

श्री जीयालाल जी शुरु में एक साधारण कर्मचारी के रुप में पब्लिक वर्कस विभाग में नियुक्त हुये थे । वहां अपने अफसरों के प्रिय बनने के कारण उनके प्रोत्साहनों से वो 'रुढ़की' सिविल इंजीनियरिंग करने के लिये गये । दो वर्ष बाद वो इंजीनियरिंग की परीक्षा देकर आये तो इन्हे अपने पूर्वजों के शहर अनन्तनाग तहसील में एस. डी. ओ. के पद पर नियुक्त किया गया । अनन्तनाग में इन्होने प्रसिद्ध 'शाहकोल' नहर जिसका स्तोत्र पहलगांव की नदी से होता है, उसका कार्य प्रंशसनीय ढंग से किया । वह नहर श्री जीया लाल जी की संरक्षता में ही चालू हुई है । तदुपरान्त ये रामबन में इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए । रामबन की चन्द्रभाग नदी पर इन्होने अपनी संरक्षता में एक बड़ा भारी पुल बनवाया, जिसके निर्माण स्तम्ब पर इनका नाम भी खुदा हुआ है । वहां पर यह 12 वर्ष रहे । रामबन से इनकी बदली श्री नगर में हुई । कश्मीर घाटी में सन् 1893 से 1903 के दौरान बहुत बार बाढ आयी थी । बाढ की रोकथाम के लिये इन्हें फलड चैनल की एक नहर खुदवाने का कार्य सौंपा गया, जिसमें हजारों मजदूर तीन वर्ष तक कार्यरत रहे । यह नहर इनकी सरक्षता में बनी । फिर वो कई वर्ष लद्दाख, गिलगत, पाडर असकरद, किशतवाड आदि बीहड जगहों में जाकर प्रसंशनीय कार्य करते रहे । उक्त सभी कार्य इन्होनें महाराजा प्रताप सिंह के शासन काल में किये । प्रताप सिंह जी धार्मिक व दयावान राजा थे और सुरक्षा व शान्ति की दृष्टि से उनका शासन काल (1903—1925), काश्मीरी इतिहास में सबसे लम्बा काल रहा । इसी काल में 1924 में प्रभा जी का जन्म हुआ था ।

सन् 1926 से 1947 तक काश्मीर की सत्ता महाराज के भतीजे हरी सिंह जी ने सम्भाली । महाराजा हरी सिंह ने अपने पैलसो को श्री जीया लाल जी की सरक्षता में बनवाया। ये पैलस श्रीनगर मे, बुलिवार्ड रोड पर श्री शंकराचार्य मन्दिर के दामन में बने हुये हैं । वहां भी श्री जीयालाल जी ने अपना कार्य बहुत सफलता से पूर्ण किया । सन् 1931 में श्री जीयालाल जी ने वजीरबाग में अपना नया मकान बनवाया जो कि सिविल इंजीनीयरिंग व आर्कीटैक्चर दृष्टि से एक महल जैसा ही प्रतीत होता है । 55 वर्ष की आयु में, सन् 1935 में श्री जीयालाल जी काश्मीर सरकार की नौकरी से सेवा निवृत हो गये । 1943 में श्री जीयालाल जी वजीरबाग में अपने नये मकान में आकर रहने लगे । जन्म व बचपना लखनउ में होने के कारण, लखनवी सभ्यता का प्रभाव जीया लाल जी पर था ही। वो हिन्दी, उर्दू का प्रयोग भी अक्सर करते। घर में खाना पीना भी थोड़ा काश्मीरी पंडितों से भिन्न था । इनकी

माता जी भी घर में 'बहुरानी' के नाम से जानी जाती थी, जैसा कि लखनउ में प्रचलित है । श्री जीयालाल जी आसतिक विचार धारा वाले थे, साधु सन्तों का मान करते थे । लाहौर के परमहंस श्री नारायण तीर्थ के शिष्य श्री मुक्तानन्द जी, जो एक सन्यासी थे, का आना जाना भी इस परिवार में था । इन सन्यासी महोदय ने कई परिवार जनों को हठयोग में दीक्षित कर रखा था ।

इस पंडित दम्पति की 6 सन्तानें हुई, तीन लड़के और तीन लड़किया । सबसे बड़े, श्री जवाहर लाल जी का विवाह स्वामी लक्ष्मण जी की बड़ी बहन श्रीमती गुणवती (ससुराल का नाम शामरानी) के साथ सन् 1914 में सम्पन्न हुआ था । उस समय स्वामी जी मात्र 7 वर्ष के थे और तब उनका उपनयन संस्कार हुआ था । इसी वर्ष गुरुवर्य स्वामी रामजी, जो हवाकदल त्रिका आश्रम में रहते थे, ने अपना भौतिक शरीर त्याग दिया था । इन्ही दम्पति महोदय की एक कन्या ब्रहावादिनी गुरुवर्य शारिका देवी व सुपुत्र श्री मोहन लाल जी थे, जो बचपन से ही स्वामी लक्ष्मण जी का शिष्यत्व स्वीकार कर चुके थे । सोपोरी दम्पती महोदय की सबसे छोटी कन्या गुरुवर्य सुश्री प्रभा देवी जी हैं ।

3. **प्रारम्भिक जीवन** : देवी जी के जन्म के समय, इनकी बड़ी बहन शारिका जी लगभग 11 वर्ष की थी । शिशु प्रभा जी का पालन–पोषण माता राधिकारानी जी के साथ साथ बहिन शारिका जी ने बड़े स्नेह से किया । माताजी तो केवल स्तन्य पान ही कराती थी । तब स्वामी जी 17–18 वर्ष के थे । स्वामीजी व देवी श्री शारिका के परिवारों में रिश्तेदारी के साथ साथ गुरु शिष्य सम्बन्ध भी पैदा हो चुके थे । अतः शिशु प्रभाजी को बचपन से ही स्वामी जी का सहज, सुन्दर संनिध्य व सत्संग प्राप्त था ही । स्वामी जी इस शिशु को प्रेम से अपने पूजा रुम में ले जाते और अपनी गोद में बैठाकर स्वयं स्माधिष्ट हो जाया करते थे । उस समय स्वामी जी मार्बल हाउस में रहते थे । अतः शिशु प्रभा जी, गुरुवर्य शारिका जी व स्वामी जी की गोद में ही खेलते कूदते बढ़ा हुआ । स्वामी जी व शारिका जी एक बार सप्ताह भर के लिये गोपी तीर्थ जब गये थे तो शिशु प्रभा जी भी साथ थी और इन्होनें दोनों सन्तों की शैविक अभ्यास लीला को मूक रुप से देखा । प्रभा जी जब 9–10 वर्ष की थी तो एक दिन भाई मोतीलाल जी के साथ मार्बल निवास पर गई । स्वामी जी ने अपने नजदीकी सम्बंधी इन दोनों बच्चों को कुछ खाने की वस्तु देने का प्रोत्साहन इस शर्त पर दिया कि वो

'संग्रह स्तोत्र' कंठस्थ करें । दोनों बच्चों ने यह स्तोत्र कंठस्थ किये और ईनाम पाया ।

प्रभा जी शायद 10 वर्ष की थी जब शारिका जी अपने अलग मकान ईश्बर में रहने लगी थी । प्रभाजी ने मिडिल की परीक्षा हवाकदल मिडिल स्कूल से उर्तीण की । स्कूल में निबन्ध लिखने, भजन गाने व ड्रामों में भाग लेने का बचपन में शौक था । बचपन से ही 'साहसी' प्रवृति का व्यक्तित्व था । बचपन में देवी जी को कई बार गुरुवर्य महताबकाक जी के दर्शन करने का मौका मिला । प्रभा जी को आज भी वो गंभीर मूर्ति सम्पन्न, सफेद फिरन पहने हुये, सिर पर पगड़ी बांध कर विमर्शपरायण सन्त श्री महताबकाक जी की स्मृति पावनता/ताजगी प्रधान करती रहती है । देवी जी ने छुट्टपन में ही उन से आशीर्वाद ग्रहण किया । वो प्रभा जी को कई बार कहते थे, सावधान होकर सभी काम किया करो । महताबकाक जी काश्मीरी भाषा में बड़ी मधुर वाणी से सभी को आशीर्वाद देते थे । वो सुश्री शारिकादेवी जी पर विशेष कृपा रखते थे ।

सुश्री प्रभा जी का 'ईश्बर' मे शारिका जी व स्वामी जी के पास भी आना जाना रहता था । इन मुलाकातों/दर्शनों में स्वामी जी, प्रभाजी को 'तन्त्रांलोक' के कई श्लोक कंठस्थ करवाते रहते थे और विवाह न करने के लिये समझाते । प्रभा जी अपनी बाल बुद्धि से कह देती की वो शारिकादेवी जी की भांति कायर नहीं है और विवाह करेगी और उससे प्राप्त दुख सुख का स्वागत भी हर्ष पूर्वक करेगी । यह उतर सुनकर महाराज जी हंस दिया करते थे ।

15–16 साल की आयु में सुश्री प्रभा जी ने मैट्रिक व एफ. ऐ. की परीक्षाएं प्राईवेट रुप से पढ़ कर पास की । यह सन् 1940 की बात है, जब स्वामी लक्ष्मण जी को षटचक्र भेदन का अनुभव हुआ था। सर्दियों में प्रभा जी अपने बहनोई प्रोफेसर जीयालाल कोल जी के पास जम्मू में रहती थी । जम्मू में रहते हुए इन्होने रत्न, भूषण की पढ़ाई आर्य कन्या पाठशाला में की । स्कूल की परीक्षाओं में प्रभा जी हमेशा प्रथम श्रेणी में उर्त्तीण होती रही। फिर जब पंजाब विश्वविद्यालय की ओर से इन परीक्षाओं में भाग लिया तो दोनों परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी से उर्त्तीण हुई । जम्मू में भूषण की परीक्षा देने के बाद सुश्री प्रभाजी, ईश्बर आश्रम में शारिका जी के पास एक मास रही । इस अल्प अवधि में महाराज जी ने प्रभा जी को सांब–पंचाशिका के श्लोक कश्मीरी भाषा में अर्थ सहित पढ़ाये । देवी जी

नधुर मधुर स्वरों में इनको गाया भी करती थी । साथ साथ में उन 50 श्लोकों का प्रभाजी ने हिन्दी में भी अनुवाद कर दिया, जिससे महाराज जी अति प्रसन्न हुये । समय आने पर फिर वह पुस्तिका देवी जी द्वारा छपाई गयी ।

सुश्री प्रभा जी ने प्रभाकर की परीक्षा श्रीनगर में स्वयं घर में ही पढ़ कर उत्तीर्ण की । देवी जी के जीजा जी आदरणीय प्रौफेसर जीयालाल जी कौल, जम्मू में प्रिन्स आफ वैलज कालेज में संस्कृत/हिन्दी विभाग के प्राघ्यापक थे, उन्ही की देख रेख में प्रभाजी ने रत्न, भूषण तथा प्रभाकर की परीक्षाएं उर्तीण की । अतः प्रथम विद्यागुरु होने का श्रेय प्रौफेसर जीयालाल जी को है । वे गृहस्थी संत सौजन्य तथा निराभिमानी देव-तुल्य थे । श्री ईश्वर स्वरुप जी के प्रिय सत शिष्य थे । प्रभा जी को बचपन से ही विद्यार्जन की रुची रही । उनका धार्मिक विचारों का सिंचन तो स्वयं शारिकादेवी जी, स्वामी लक्ष्मण जी, श्री महताबकाक जी, मुक्तानन्द जी (लाहौर वाले) आदि सन्तों के द्वारा होता ही रहा ।

सन् 1942 ई० में सुश्री प्रभा जी जब 18 वर्ष की हुई तो इनका विवाह श्री जीयालाल जी मट्टू के लड़के श्री मोती लाल मट्टू के साथ बड़ी धूम धाम से हुआ । महाराज जी भी इस विवाह में उपस्थित थे । कहते हैं जिस समय अग्नि के सामने बैठ कर श्री जीयालाल जी कन्या दान कर रहे थे तो महाराज जी ने बड़े धीमें स्वर में मोहन लाल जी से कहा कि यह दान तो पुनः लौटकर आयेगा । इस कहने का तात्पर्य तब मोहन लाल जी तो समझे नहीं । श्री मोती लाल जी उस समय 21 वर्ष के थे व कराची में इन्जीनियर की ट्रेनिंग ले रहे थे । सन् 1944 ई० में विवाह के अभी 2 वर्ष भी नहीं हुये थे कि मोती लाल जी गर्मी की छुट्टियों में श्रीनगर आये । एक रात जब प्रभा जी व मोतीलालजी ईश्बर में शारिका जी के पास रुके हुये थे तो उन्हे भयंकर शिरोवेदना होने लगी, जो रुकी नहीं । श्री मट्टू जी का शिरोवेदना के न रुकने के कारण 8वें दिन अकस्मात निधन हो गया । श्री मोती लाल जी ने शरीर छोड़ने से पहले सुश्री प्रभा जी को बताया की वे देवलोक के एक गन्धर्व है और उन्हे यह मानव शरीर छोड़ना है व उन्हें अपनी बहन शारिका जी के पास ही रहने को कहा । इस घटना से सारा परिवार अति दुखी हुआ । 20 वर्ष की कन्या पर दुख का पर्वत आ जाने से माता-पिता दुविधा में पड़ गये । स्वामी लक्ष्मण जी ने प्रभा जी के माता-पिता को धैर्य बंधाते हुये कहा कि यह भी अपनी ननस्वी बहन के साथ रह कर

जीवन का उद्धार करेगी । बड़ी बहन शारिकादेवी जी, अपने माता–पिता से परामर्श उपरांत, प्रभाजी को उनके पति के देहांत के एक वर्ष बाद अपने पास ईश्बर आश्रम में ले आई । ऐसे परमेश्वर की लीला शक्ति से प्रभा जी को पति के देहांत उपरांत शादी के केवल 2 साल बाद ही जबरन अपनी बड़ी बहन व स्वामी जी के संग–2 रहने का संयोग बना ।

४. आध्यात्मिक यात्रा –

(अ) वास–शारिका आश्रम–ईश्बर :

सुश्री प्रभा जी 21 वर्ष की आयु में सन 1945 ई0 में अपनी बड़ी बहन शारिका जी के साथ उनके ईश्बर आश्रम में आकर रहने लगी । यह शारिका आश्रम उनके पिताजी द्वारा ईश्बर पर्वत के दामन में बनवाया गया था । यह 2 मंजिल का सुखप्रद मकान था, चारों तरफ बगीचा, कोने में एक मन्दिर व मकान के उपर "चेतन्यात्मा" खुदा हुआ था । बगल में स्वामी लक्ष्मणजी का आश्रम था । यह मकान भी श्री जीयालाल जी की सिविल कला का एक सुन्दर नमूना था । इन दोनों मकानों के सामने सड़क की दूसरी तरफ दो कुटिया बनी हुई थी, जहां दोनों सन्त अपनी साधना करते थे । भक्त जन इन कुटियों को 'गोड हाउस' के नाम से पुकारते है–मगर अब वहां यह कुटियायें खन्डर अवस्था में पड़ी है । यह आश्रम वर्तमान ईश्वर आश्रम से 1.5 किलोमीटर दूर उपर पहाड़ी पर स्थित है । श्री जीयालाल सोपोरी द्वारा इस आश्रम में खाना बनाने वाला सेवक व माली, इत्यादि का पर्याप्त प्रबंध किया हुआ था । इस आश्रम के चारों तरफ कुछ मुस्लिम लोगों के घर हैं । वातावरण बहुत ही शांत व सुन्दर है । शारिका जी इस आश्रम में 1934 से निवास कर रही थी । प्रभाजी ने इस आश्रम में प्रवेश उपरान्त स्वामी लक्ष्मणजी का शिष्यत्व ग्रहण किया । गुरुवर्य ने प्रभाजी को राजयोग तथा मंत्र दीक्षा देकर कृतार्थ किया । प्रभा जी को अपने स्वरुप की प्रत्यभिज्ञा तो उसी क्षण हो गई, जब वो गुरुदेव के पास आयी । उनके चरणों में रहकर आत्मानंद का समय समय पर चर्वण होता रहा । महाराज का वरदहस्त उनके मस्तक पर आकर रामबाण के समान सभी संकल्पों की इति करने में समर्थ था । उनके जीवन की संकीर्ण सरणि महान सागर की लहरों में विलीन सी हो गई । देवी जी अनुसार इसे प्रत्यक्ष अनुभव तो नहीं कहेंगें, किन्तु हां जीवपने का

रुख गुरु कृपा से बदल सा गया ।

अब सुश्री प्रभाजी ने स्वामीजी से शैव शास्त्र पढ़ने शुरु किये। सबसे पहले श्रीमान गुरु प्रवर ईश्वर स्वरुप जी से संस्कृत का व्याकरण लघु कौमदी पढ़ी । तदुपरान्त गुरुदेव ने उन्हे परा–प्रवेशिका, परमार्थ सार, प्रत्यांभिज्ञ हृदयं, शिव सुत्र और फिर 'स्पन्द निर्णय,' क्रम पूर्वक कश्मीरी भाषा में पढ़ाये । इन के बाद शिवस्तोत्रावलि तथा गीतार्थ संग्रह, दोनों पुस्तकों को बड़े परिश्रम तथा स्नेहपूर्वक अर्थ सहित पढ़ाया । देवी जी रात को इनका हिन्दी अर्थ अपनी बाल सुलभ बुद्धि से करती रही । कई वर्षो के बाद उन्होनें यह हिन्दी उल्था महाराज जी को दिखाया । वे अति प्रसन्न हुये । उन्होनें प्रौफेसर जीयालाल जी कौल को, जो हिन्दी/संस्कृत के प्रौफेसर थे, यह हिन्दी उल्था दिखायी । श्री जीयालाल जी कौल ने उत्साह बढ़ाते हुये इन दोनों पुस्तकों को छापने के लिये प्रोत्साहन दिया । कई वर्षो के बाद में ये दोनों पुस्तकें देवीजी द्वारा छपवाई गई । शिवस्तोत्रावलि पर पर्याप्त काम श्री गुरुदेव ने ही किया था । अतः महाराज जी के नाम से ही वह पुस्तक देवी जी नें जनता के सम्मुख प्रकट की ।

स्वामी जी को नये गुरु रुप में पाने पर, प्रभा जी अब शास्त्र अध्ययन, अभ्यास व गुरु सेवा में रत रहने लगी । प्रभा जी के परमगुरु श्री महताबकाक जी का देहांत सन् 1945 में हो गया, उस समय स्वामी जी मोन व्रत धारण किये हुये थे । इन्ही दिनों हिन्दोस्तान में आजादी का आन्दोलन जोर पकड़ रहा था, जिसका असर काश्मीर रियासत पर भी पड़ ही रहा था । सितम्बर 1947 में पाकिस्तान ने काश्मीर के साथ युद्ध छेड़ दिया और पाकिस्तानी फौजें कश्मीर के काफी अन्दर, श्रीनगर तक घुस गयी । काश्मीर के महाराजा हरी सिंह ने भारत सरकार से मदद मांगी और अपनी रियासत को हिन्दूस्तान से जोड़ दिया । काश्मीर की रक्षा के लिये भारतीय सेना श्रीनगर पहुंची और पाकिस्तानी सेना को वापिस धकेल दिया । काश्मीर में हिन्दू मुस्लिम दंगें होने से भी, श्रीनगर में राजनैतिक माहौल तैनाव पूर्ण हो गया था । हालात को देखते हुये श्री जीयालाल जी अपने परिवार सहित, प्रभा जी व शारिका जी को साथ लेकर श्रीनगर से झांसी आ गये और वहां रहे। फिर कुछ समय बाद इलाहाबाद जा कर रहने लगे ।

उन दिनों में स्वामीजी के पिता महोदय रुघन थे । अतः वे शारिका जी व प्रभाजी के साथ तो न जा पाये किन्तु छः मास के बाद पोष शुकल पक्ष प्रतिपदा को पिताजी के देहांत उपरान्त स्वामी जी

महाराज इलाहाबाद दोनों देवियों के पास आ गये । उनके साथ गोपीनाथ सेवक भी था । आते ही महाराज ने 'बैराना' मोहल्ले में किराये पर मकान ले लिया । फिर प्रभा जी व शारिका जी उनके पास तीन मास रहे । वहीं महाराज ने दोनों शिष्यों को तंत्रालोक का प्रथम आह्नक पढ़ाने की कृपा की । माघ मास में सब रोज ये प्रयागराज रात को रिक्शा में 12 बजे रात तक जाते रहें । वहां 'माघ मेला' का सुन्दर वातावरण देख कर महाराज जी हर्षित हो जाते थे । रामलीला का सुन्दर दृश्य इन सब को भाता था । अतः बहुत ही आनन्द से वे वर्ष बीत गये । गर्मियों में शारिका जी व स्वामीजी श्रीनगर आ जाते थे । प्रभा जी माता पिता जी के साथ ही रहती थी । प्रभा जी ने इलाहाबाद में ज्ञान प्रभा की पढ़ाई की व उसके लिये छः पेपरों की परीक्षा भी दी । परन्तु स्वामी जी नहीं चाहते थे कि वो आगे पढ़े व कोई स्कूल में नौकरी करे । प्रभा जी पहले आर्य समाज स्कूल में दो मास पढ़ा भी चुकी थी । देव संयोग ऐसा हुआ कि जब ज्ञान प्रभा का रिजल्ट घोषित हुआ तो उसमें प्रभा जी का नाम ही नहीं था ।

ई0 सन् 1948 में प्रभा जी, शारिका जी परिवार सहित नैनीताल जाकर एम्पायर होटल में रहे तो स्वामी जी महाराज भी उनके साथ एक महीना रहे । नैनीताल के बाद कुछ समय के लिये प्रभा जी अपने माता पिता जी के साथ धर्मशाला जाकर रही । काश्मीर में हालात सामान्य होने पर, सन् 1949 में प्रभा जी वापिस अपने आश्रम ईश्बर, श्री नगर, में लौट आई ।

माता पिता के स्वर्ग गमन के बाद श्री लक्ष्मण जी अपने ईश्बर मकान में एक योगी के समान रहने लगे । पुनः स्वामी जी दोनों सद–शिष्यों को तन्त्रालोक कई वर्ष तक पढ़ाते रहे । साथ ही स्वामी जी अपने सम्मुख प्रभा जी और शारिका जी को प्रातः सांय अभ्यास भी एक घंटा करवाते थे । प्रभा जी की चिन्ताएं अब सब खत्म हो चुकी थी । गुरुदेव दोनों बहनों को तन्मयता से पढाते रहे । लगभग एक वर्ष तक तन्त्रालोक के महत्वपूर्ण खंडो को पढा कर शैव दर्शन के अन्य ग्रन्थों को भी स्वामी जी महाराज ने पढाया । दोनों आश्रमों में परम शन्ति का वातावरण बना रहता था और तीनों महानुभावों की साधना का अभ्यास भी निर्विघ्न तथा नियमपूर्वक चलता रहता था । यह सन् 1950 की बात है जब प्रभा जी मात्र 26 वर्ष की थी । भगवत भक्ति में इस प्रकार समय आनन्दपूर्वक बीतता चला गया और सन 1957 आ गया, देवी जी 33 वर्ष की हो गई । इस वर्ष देवी जी के पिता श्री जीयालाल जी ने

अपना शरीर त्याग दिया । अब तक स्वामी जी की ख्याति चारों ओर फैल चुकी थी । इसी वर्ष महाराष्ट्र के सन्त मेहर बाबा स्वामी जी से मिलने आश्रम आये परन्तु चुंकि स्वामी जी 'गाड हाउस' कुटियों के निर्माण कार्य में व्यस्त थे तो वो मेहर बाबा से न मिल सके, जिसका बाद में उन्हे दुख भी हुआ । स्वामी सतचिदानन्द जी भी जगाधरी से इसी समय स्वामी जी के दशनार्थ आये थे । काश्मीर में घूमते–घामते जापान के पोल रेप्स जिन्होने विज्ञान भैरव का अंग्रेजी उल्था जापान में छपवाया था, स्वामी जी से इसी वर्ष मिले व उनसे उक्त शैव शास्त्र पढा । अगले वर्ष सन 1958 में आचार्य रामेश्वर झा शायद प्रथम बार स्वामी जी से मिले और उन्हे स्वामी जी में अपने गुरु के दर्शन हुए । आचार्य रामेश्वर झा वाराणसी में संस्कृत के प्रकांड पंडित थे । देवी प्रभा जी का आचार्य जी के साथ संभाषण आदि करने के मिस, संस्कृत ज्ञान और भी बढ गया । इस प्रकार देवी जी पर गुरु और संतो की कृपा बनी रहीं । प्रभा जी को अध्ययन करने का चाव तो छुटपन से ही था । कहावत है 'शक्कर खाने वाले को तो देव शक्कर ही खिलाता है, यदि सच्ची लगन हो तो ।'

इसी दौरान प्रभा जी ने स्वामी जी से क्रमनय प्रदीपका का हिन्दी–टीका करवा कर, इस पुस्तक का संपादन व प्रकाशन किया। देवी जी जब 36 वर्ष की हुई तो माता श्री राधिका रानी जी ने अपनी देह त्याग दी । अगले वर्ष दोनों बहनों ने ईश्बर वाला मकान बेच कर स्वामी जी के साथ नवीन ईश्वर आश्रम में रहने के लिये प्रवेश किया।

(आ) वास – ईश्वर आश्रम :

सन् 1962 में 38 वर्ष की आयु में प्रभाजी ने, शारिका जी व स्वामी जी के साथ शुभ मुहूर्त में ईश्वर आश्रम में प्रवेश किया । आज पिछ्ले 43 वर्षो से वो वहां वास कर रहीं हैं । ईश्वर आश्रम में तीन कमरों का स्थान हैं । उपर का कमरा स्वामी जी का और नीचे वाले दो कमरे शारिका जी व प्रभा जी के वास के लिए हैं । यहीं पर सेवक गोपी नाथ जी भी रहते थे जो इन तीनों महानुभावों का सेवा कार्य करते थे ।

इस आश्रम में प्रवेश उपरान्त स्वामी जी ने इन दोनों सदशिष्यों को तंत्रालोक का अध्ययन पुनः करवाना शुरु किया । तंत्रालोक जितना पढा जाता, दोनों बहनें रात को उसे हाथ से लिखती । अब कश्मीर शैवमत का थोड़ा थोड़ा प्रचार कार्य भी शुरु

हो चुका था । स्वामी जी के शिष्य जयदेव सिंह ने 1963 में 'प्रत्याभिज्ञा–हृदयम' का अंग्रेजी अनुवाद, श्री जानकी नाथ कोल ने 'मुकन्द माला' का हिन्दी अनुवाद छपवाया । फिर स्वामी जी द्वारा हिन्दी में अनुवादित 'शिवस्तोत्रावलि' छपी । तब प्रभाजी 40 वर्ष की हो चुकी थी । स्वामी जी द्वारा कुण्डलीनी रहस्य पर संस्कृत में व्याखान सन् 1965 में वाराणसी संस्कृत विद्यालय में दिया गया, जिस पर इस विद्यालय ने उन्हे होनरेरी डाक्टर की पदवी से सम्मानित किया । श्री आर0 गनोली ने इसी वर्ष 'अनुतर विर्मशनी' का इटालियन भाषा में अनुवाद कर के छपवाया । अभ्यास, अध्ययन, सत्संग में रत प्रभा जी 42 वर्ष की हो गई। इसी वर्ष वृन्दावन के कृष्ण भक्ति रस में डूबे संत श्री बालकृष्ण जी महाराज अपने शिष्यों सहित प्रथम बार ईश्वर आश्रम पधारे । फिर अगले साल अपनी पूर्ण रास–मण्डली के साथ एक मास के लिए ईश्वर आश्रम में भगवान कृष्ण की रास लीला दिखाई । प्रभा जी का इन सन्त महाराज से मिलना तदुपरान्त वृन्दावन में भी होता रहा । जब गुरु चिन्तन में प्रभा जी ने आयु के 44वें वर्ष में प्रवेश किया तो गुरु स्तुति का हिन्दी अनुवाद कर साथ में गुरु महाराज की जीवनी पर एक पुस्तक छपवाई । अगले वर्ष महर्षि महेश योगी जी का आगमन आश्रम में हुआ और प्रभा जी को उनका सत्संग लाभ श्रीनगर में बैठे बैठे मिला । श्री महेश योगी जी के निवेदन पर स्वामी जी ने उनके शिष्यों को श्रीनगर में ही कश्मीर शैव मत पर व्याख्यान भी दिये।

सन् 1970 में देवी जी तीर्थ दर्शनार्थ वृन्दावन, मथुरा, ऋषिकेश, शिवानन्द आश्रम, वैष्णोदेवी इत्यादि धार्मिक स्थानों पर शारिका जी, स्वामी जी व अन्य भक्त जनों संग गई । इसी वर्ष आश्रम द्वारा प्रथम बार 'मालिनी' पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन हुआ जिसमें देवी जी का लेख भी छपा । अध्ययन, पढ़ने–लिखने, अध्यात्मिक अभ्यास का तब काफी जोर था । वाराणसी के संस्कृत प्राध्यापक श्री जयदेव सिंह भी स्वामी जी से शैव शास्त्र पढने के लिए प्रथम बार इसी वर्ष आये । इसी काल में देवी जी के भाई जवाहरलाल जी के सुपुत्र श्री मोतीलाल सोपोरी ने गांधीनगर, जम्मू में अपना नये मकान मे रहना भी आरम्भ किया था । इस मकान में शारिका जी व प्रभा जी हर सर्दियों के मौसम में 2/3 मास के लिये जा कर रहती थी । दिसम्बर में शारिका जी का जन्म दिवस श्रीनगर में मनाकर दोनों बहने जम्मू जाती थी और शिवरात्री का त्यौहार जम्मू में मनाकर वापिस श्रीनगर आ जाती थी। श्री मोतीलाल जी के साथ का मकान स्वामी जी के भाई का है, जहा पर सर्दियों में स्वामी जी ठहरते थे । सन् 1971 में John Hugh व

Dennise Huge अमेरिकन दम्पति जो महर्षि महेश योगी के शिष्य थे, ईश्वर आश्रम में शैव शास्त्र पढने के लिये आये । यह दम्पति ईश्वर आश्रम के बगल में मकान लेकर 16 / 17 साल तक रहा और वे दोनों स्वामी जी से शैव शास्त्र पढते रहे । स्वामी जी ने शैवमत पर उन्हें बहुत से व्याखान किये जिन्हे इन्होनें कैसेटस में रिकार्ड भी किया । Secret Supreme पुस्तक भी उन्हीं व्याखानों की देन है । इन विदेशियों का आश्रम में संग होने से, प्रभा जी को विदेशी सभ्यता को बहुत करीब से समझने व परखने का मौका भी मिला । गुरु कृपा से इस अमेरिकन दम्पति को पुत्र लाभ भी हुआ, जिसका नाम स्वामी जी द्वारा 'विरेश' रखा गया । यह दम्पति अब अमेरिका में शैव शास्त्रों का प्रचार कार्य कर रहा है ।

प्रभा जी का अभ्यास, अध्ययन कर्म तो चलता ही रहा । आयु के 49वें वर्ष में देवी जी ने अभिनव गुप्त जी की पुस्तक 'परा प्रवेशिका' का हिन्दी अनुवाद कर गुरु चरणों में अपनी प्रथम भेंट रुप में छपवाया। आश्रम के साथ वाला मकान गुरु बहिन कमलाबाबा का था । दरअसल ईश्बर–आश्रम कमलबाबा के मकान की जमीन में ही स्थित था । श्रीमती कमलाबाबा ने इसी वर्ष 'प्रत्याभिज्ञा–हृदयम' का हिन्दी अनुवाद करके, एक पुस्तक प्रकाशित करवाई । फ्रांस में स्वामी जी के एक शिष्य A.Radonx ने अनुतर विमर्शनी का फ्रैंच भाषा में अनुवाद छपवाया । सन् 1976 में सन्त रंगानन्द नाथ, जो कि रामकृष्ण आश्रम के दक्षिण भारत के संत थे आश्रम पधारे, उस समय देवी जी 52 वर्ष की थी । इसी वर्ष अखनूर के गौरी शंकर मन्दिर के महंत कृपाल गांधी जी प्रथम बार आश्रम में आये और देवी जी के शिष्य बने । प्रभा जी ने अब अभिनव गुप्त जी द्वारा रचित 'परमार्थ सार', हिन्दी अनुवाद कर, एक पुस्तक छपवाई । सन् 1978 में जगाधरी के संत सच्चिदानन्द जी आश्रम में पधारे । उन्होने अपनी लिखित पुस्तक 'शारिका बोध' प्रभा जी को दी, जो देवी जी ने पुस्तक रुप में संपादित कर छपवाई । इन संत महाराज का बहुत सालों से ईश्वर आश्रम आना जाना था व प्रभा जी का इनसे सत्संग रहता था । सन् 1980 में देवी शारिका जी की आंखो में कुछ शिकायत कारण प्रभा जी उन्हे लेकर चण्डीगढ आयी व पी.जी.आई. से ईलाज करवाकर वापिस श्रीनगर ले आई । इसी साल जयदेव सिंह जी ने शक्ति सूत्र–स्पंद कारिका का अंग्रेंजी भाषा में अनुवाद करके छपवाया । सन् 1981 आ गया देवी जी ने जीवन यात्रा के 57 वर्ष पूर्ण किये । आचार्य रामेश्वर झा जी स्वर्ग सिधार गये । आचार्य जी ने सन् 1958 में स्वामी जी का शिष्यत्व स्वीकार किया था

तथा गुरु स्तुति की रचना की थी । आचार्य रामेश्वर झा स्वयं वाराणसी में सतगुरु रुप में प्रतिष्ठित थे व इनके अनेकों शिष्य देश व विदेश में संस्कृत आध्यापकों के पदो पर प्रतिष्ठा पा रहे हैं । आचार्य जी ने अपनी पुस्तक 'पूर्णता प्रत्याभिज्ञा' में स्वामी जी के गुरुत्व का आभार प्रकट किया है । प्रभा जी का आचार्य जी से जीवन के आखिरी समय तक उनसे पत्र व्यवहार रहा । इसी वर्ष श्री नीलकंठ गुरुटू ने स्पंद कारिका का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करवाया । अगले वर्ष स्वामी जी ने कश्मीर शैवमत के 'यम–नियमों' पर भक्तजनों को व्याख्यान दिये जो बाद में एक पुस्तक के रुप में भी छपे ।

सन् 1983 आ गया, देवीजी ने जीवन के 59वें वर्ष में कदम रखा । आश्रम में अब अर्मतेश्वर भैरव मन्दिर की स्थापना की गई । अगले वर्ष सत्संग हाल बना और आश्रम में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी पधारी । इंदिरा गांधी प्रथम बार 1974 में मंगलवार को 4 बजे ईश्वर आश्रम में पधारी थी जहा वो स्वामी जी से मिली । आचार्य रामेश्वर झा की पुस्तक पूर्णतय प्रत्याभिज्ञा भी इसी वर्ष छपी । श्री नीलकंठ गुरुटू व रेनरी गनोली ने परात्रिशिका विवर्णा का अनुवाद हिन्दी व इटालियन भाषा में भी इसी काल में छपवाया । सेवक श्री गोपीनाथ ने भी इसी काल में चुपके से अपना शरीर त्याग दिया

सन् 1987 में, श्री प्रभा जी 63 वर्ष की थी जब उन्होने अभिनव गुप्त जी की गीता व पंचस्तवी की हिन्दी टीका छपवाई । इस मौके पर स्वामी जी ने आश्रम में मिठाई बंटवाई । इसी साल संस्कृत स्कोलर Dr. Bettina Baumer प्रथम बार आश्रम में आई व अमेरिकन दम्पति John & Dennis Hugh आश्रम छोड़ कर 17 साल बाद वापिस अमेरिका चले गये । वाराणसी के मनीषि डा0 परमहंस मिश्र 2–9–1987 को आश्रम में आये और स्वामी जी ने उन पर शक्तिपात किया व उन्हे सुश्री प्रभा देवी जी द्वारा लिखी गीता भेंट की । परमहंस जी तब 67 वर्ष के थे और स्वामी जी के आशीर्वाद से उन्होनें तंत्रालोक का हिन्दी अनुवाद कर 8 भागों में छपवाया जो कि 1992–1999 में सम्पन्न हुआ । इनका संपर्क देवी जी से बराबर बना हुआ है ।

सन् 1988 में कश्मीर में राजनैतिक तनाव शुरु हो गया । इसका थोड़ा बहुत प्रभाव आश्रम पर भी पड़ने लगा इसके बावजूद भी "Secret Supreme" जयदेव सिंह की परात्रिशिका विवर्णा व

राज दुलारी कौल की गुरु स्तुति भक्तों के बीच पहुंची । सन् 1989 में बड़ी संख्या में हिन्दू लोगों ने कश्मीर से पलायन कर देश के अन्य भागों में शरण ली । स्वामी जी, शारिका जी व प्रभा जी आश्रम में ही स्थित रहे । सन् 1990 में स्वामी जी ने स्वयं अपने निरीक्षण में एक यज्ञशाला, भैरवधाम, सत्संग हाल ओर भैरव मन्दिर को नवीन रुप से सुसज्जित करवाया । सन्1991 में स्वामी जी ने व शारिका जी ने शरीर त्याग दिये ।

दोनों गुरुजनों के भैरवधाम जाने के उपरांत देवी प्रभा जी आश्रम में अकेली रह गई । शारिका जी बड़ी बहन होने के साथ–साथ उनकी प्रथम आध्यात्मिक गुरु भी थी । उन्हें शारिका जी से, जीवन के मार्ग में सावधानता का, लोगों से अल्प मेल–जोल का, अपने गुणों को छिपाते रहने का, मान–अपमान की ओर ध्यान न देने का, भगवान पर अटूट विश्वास रखने का तथा अभ्यास परायण रहने का परामर्श सदा मिलता रहता था । प्रभा जी अपनी बहन का बड़ी होने के नाते व गुरु रुप में, दोनों रुपो में, आदर करती थी । तब प्रभु की सत्प्रेरणा से प्रेरित होकर प्रभा जी ने भावार्चन पुस्तक लिखी व 1992 में नवीन गुरु स्तुति छपवाई । गुरु स्तुति फिर श्रीनगर, जम्मू, नोयडा, गुड़गांवा व दिल्ली आश्रमों में गुंजने लगी और इन सब आश्रमों में प्रभा जी उपस्थित होती रहती है । इन द्वारा बहुत सारी पुस्तके जैसे शारिका चर्चास्तव, अमरनाथ यात्रा, देवी स्तुति, त्रिक शास्त्र रहस्य, भार्वाचन, मालिनी पत्रिका व श्रृद्धार्चन इत्यादि छपवाई गई । आज देवी जी 81 वर्ष की है ओर काश्मीर के ईश्वर आश्रम में रहती हुई, अनन्त सागर में विलीन होने में ही आत्मिक सुख का आभास पा रही हैं । देवी जी भक्तजनों के लिये प्रभु की ज्ञानशक्ति व क्रिया शक्ति की साक्षात मूर्ति हैं ।



(सुश्री प्रभादेवी जी, स्वामी जी व शारिकादेवी जी के साथ, ईश्वर आश्रम, श्रीनगर में)